रियलाइजेशन कोर्स और लास्ट कोर्स

1 'कोर्स के बाद फिर रिवाइज़ कोर्स चला।

रिवाइज के बाद अब अन्तिम कोर्स है रियलाइजेशन कोर्स। अर्थात् जो कुछ सुना, जो पाया, जो बाप के चरित्र देखे उसी प्रमाण अपने में समाया कितना और गँवाया कितना?' सिर्फ सुनने वाले बने या स्वयं सम्पन्न बने?

समर्थ बने या सिर्फ अन्य श्रेष्ठ आत्माओं व बापदादा के गुणगान करने वाले बने? ज्ञान–स्वरूप, याद–स्वरूप, दिव्य गुण सम्पन्न स्वरूप और सदा सेवाधारी स्वरूप बने या इन सबके सिर्फ सुमिरण वाले बने?

2 ज्ञान तो बहुत ऊँचा है, योग बड़ा श्रेष्ठ है, दिव्य–गुण धारण करना आवश्यक है और सेवा करना मुझ ब्राह्मण का फर्ज है, ऐसा सिर्फ सुमिरण करते हो या स्वरूप भी बने हैं? 'इसी प्रकार से अपने आप को रियलाइज करना, यह है लास्ट कोर्स'।

26.10.75

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : बापदादा ने रजिस्टर चेक कर कर क्या देखा ?
और उसकी रिजल्ट क्या है ?

उत्तर : बाबा के पास जो रिजल्ट आया वो है,

1 तो क्या देखा - कई आत्माओं ने भय और लज्जा के वश लिखी ही नहीं है। लेकिन बापदादा के पास निराकारी और साकारी बाप के रूप में हर बच्चे का रजिस्टर आदि से आज तक का स्पष्ट है। इसको तो कोई मिटा नहीं सकता है।

2 अब तक के रजिस्टर की रिजल्ट में विशेष तीन प्रकार की रिजल्ट हैं -एक छिपाना; दूसरा कहीं-न-कहीं फँसना; तीसरा- अलबेलेपन में बहाना बनाना। बहानेबाजी में बहुत होशियार हैं। अपने आप को व अपनी गलती को छिपाने के लिए बहुत वन्डरफुल बातें बनाते हैं। आदि से अब तक ऐसी बातों का संग्रह करें तो आजकल के शास्त्रों समान बड़े शास्त्र बन जायें।

3 अपनी गलती को गलती मानने के बजाय उसे यथार्थ सिद्ध करने में व झूठ को सच सिद्ध करने में आजकल के काले कोट वाले वकीलों के समान हैं, माया से लड़ने के बजाय ऐसे केस लड़ने में बहुत होशियार हैं।

26.10.75

मन की बात... बापदादा के साथ

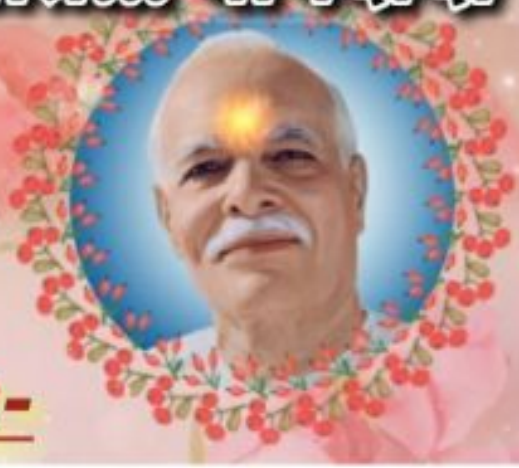

मैं आत्मा :-

- प्यारे बाबा, आप कौन सी बात पर वार्निंग देते हैं?

बापदादा :- मीठे बच्चे,

✷ ❶ आज ऐसे पाप आत्मा, ज्ञान की ग्लानि कराने वालों को बापदादा वार्निंग देते हैं कि आज से भी इस गलती को कड़ी भूल समझकर यदि मिटाया नहीं तो बहुत कड़ी सज़ा के अधिकारी बनेंगे।

✷ ❷ बार-बार अवज्ञा के बोझ से ऊँची स्थिति तक पहुँच नहीं सकेंगे। प्राप्ति करने वालों की लाइन के बजाय पश्चाताप करने वालों की लाइन में खड़े होंगे।

✷ ❸ प्राप्ति करने वालों की जयजयकार होगी और अवज्ञा करने वालों के नैन और मुख 'हाय हाय' का आवाज निकालेंगे और सर्व प्राप्ति करने वाले ब्राह्मण ऐसी आत्माओं को कुलकलंकित की लाइन में देखेंगे। अपने किये विकर्मों का कालापन चेहरे से स्पष्ट दिखाई देगा।

26.10.75

26-10-75 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं ब्राह्मण सो देवता हूँ।

ब्राह्मण सो देवता अर्थात् सर्व प्राप्ति के अधिकार प्राप्त करने वाली। हर संकल्प को श्रेष्ठ बनाने वाली। विश्व की तकदीर जगाने वाली।

26-10-75

विकारी देह रूपी साँप से सारी कमाई खत्म

ज्ञान तो बहुत ऊँचा है, योग बड़ा श्रेष्ठ है, दिव्य गुण धारण करना आवश्यक है और सेवा करना मुझ ब्राह्मण का फर्ज है

"पवित्र दृष्टि और भाई-भाई की वृत्ति"

विकारी देह रूपी साँप

→ जैसे लक्ष्य स्पष्ट है - वर्तमान संगमयुगी फरिश्तेपन का और भविष्य देवता स्वरूप का - वैसे लक्षण भी स्पष्ट दिखाई देने चाहिएं। ए प्रतिज्ञा करो कि - देह-रूपी विष भरे साँप को संकल्प में भी टच नहीं करेंगे।